RURAL DEVELOPMENT IN INDIA

देश की तीन-चौथाई जनसंख्या गाँवो मे निवास करती है। यही कारण है कि गाँधीजी भारत के गाँव के सांस्कृतिक आर्थिक तथा राजनैतिक विकास पर बल देते हुए कहा करते थे, "यदि गाँव नष्ट हुए तो भारत नष्ट हो जाएगा"। इस प्रकार गाँधीजी अपने सम्पूर्ण जीवनकाल मे ग्रामीण विकास पर बल देते रहे। इधर भारत भी यह अनुभव करने लगी है कि जब प्रगति देश के दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रो तक नही पहुँचती अथवा विकास एवं सत्ता के मुख्य गाँव नही बनते तब तक भारत की प्रगति अधूरी ही रहेगी।

ग्रामीण विकास का अर्थ :→

भारत मे 'ग्रामीण विकास' शब्द का उद्भव प्रधानतः स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद ही हुआ है।

दूसरे शब्दो मे 'ग्रामीण विकास उस क्रिया को कहते है जो ग्रामीण ढाचे को नया रूप प्रदान करे'।

ग्रामीण विकास एक ऐसी योजना है ग्रामीण जनता के रहन-सहन के स्तर मे वृद्धि, राष्ट्रीय आय मे वृद्धि, उत्पादन तथा उद्योगो मे वृद्धि आदि करके ग्रामीण जीवन को सुख तथा समृद्धि देने का प्रयास करती है।

ग्रामीण विकास की आवश्यकता एव महत्व :→

राष्ट्रपति महात्मा गाँधी ने भारत के भविष्य का निर्माण करते

के लिए ग्रामीण विकास सम्बन्धी योजना का प्रतिवेदन किया था।
इसलिए गाँधीवादी प्रयोगों पर आधारित 'ग्राम विकास' आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक स्वतन्त्रताओं पर आधारित है। इसमे वर्ग संघर्ष, जातीय विरोध, शिक्षा, शक्ति और सम्पत्ति के क्षेत्र मे प्रगतिशील निर्णय लिए जाने का प्रावधान है।
अन्न और कृषि संगठन का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण समाज का विकास करना ही है।
हम सभी जानते है कि भारत की 69 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण है, जबकि कनाडा मे 46 प्रतिशत, उत्तरी आयरलैण्ड मे 39 प्रतिशत और फ्रांस की 51 प्रतिशत जनसंख्या ही ग्रामीण है।
ग्रामीण विकास एक ऐसी बहुउद्देशीय योजना है जिसके अन्तर्गत आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, स्वास्थ्य सम्बन्धी आदि सभी समस्याओं को संगठित एवं संस्थात्मक तरीके से ग्रामीण विकास के अन्तर्गत ही दूर किया जा सकता है।
विश्वविख्यात कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इस सम्बन्ध मे कहा कि "गाँव स्त्रियों के समान है जो अपने रक्त सम्बन्धों से ही सम्बन्धित है। यह अपने व्यक्तियों को प्राथमिक आवश्यकताएँ - अन्न एवं वस्त्र प्रदान करती रहती है। ग्रामीण सौन्दर्य से यह स्त्री अलंकृत है। परन्तु यदि इस स्त्री पर निरन्तर इच्छाओं के आघात बढ़ जाते है तो यह संवेगात्मक बन जाती है तथा इसका जीवन एवं मस्तिष्क भी नीरस तथा दरिद्र हो जाता है। भारत के ग्राम इसी स्थिति मे है।

ग्रामीण जीवन मे विकास आज के युग की प्रथम आवश्यकता बन गई है।

भारत मे ग्राम विकास का इतिहास :→

भारत मे ग्रामविकास के लिए प्रत्येक युग मे प्रयास होता आया है। ग्राम विकास का आन्दोलन मे सदैव आर्थिक एवं समाजिक परिस्थितियों की छाप रही है। देश की आजादी से पूर्व और आजादी के बाद राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का ध्यान इस दिशा मे सबसे पहले केन्द्रित हुआ था। ग्रामीण विकास की आकांक्षा उनके प्रत्येक प्रयास मे लक्षित होती है। - वह आज भी ग्रामीण आर्थिक एवं समाजिक विकास मे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी ग्रामो के विकास के उद्देश्य से शान्तिनिकेतन की स्थापना की थी। उसका ही वर्तमान रूप ग्राम्य विश्वविद्यालय है। गाँधी जी द्वारा सन् 1947 मे देखा गया ग्राम विकास का सपना अब धीरे-धीरे साकार होने लगा है।

ग्रामीण विकास मे बाधाएँ :→

आजादी मे 69 वर्षों बाद भी हमारे गाँव आज भी बहुत अधिक विकसित नही हो पाए है। इसका मुख्य कारण यह है कि ग्रामीण समाज आज भी निराशावादी दृष्टिकोण रखता है।

Scanned with CamScanner

आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक समस्याओं से हमारे गाँव भरे पड़े हैं।
ग्रामीण विकास के मार्ग में दूसरी भयंकर समस्या है गामो में तेजी से बढ़ रही दलबन्दी।
दलबन्दी के कारण कोई कार्य हो ही नहीं पाता है शिक्षित और सम्पन्न लोग गामो में रहना ही नहीं चाहते हैं।

गाम विकास के उद्देश्य :—
भारत के भविष्यवक्ता एवं महान दार्शनिक महात्मा गाँधी ने ग्रामीण विकास के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा था कि, "अहिंसक समाज में कोई किसी का शत्रु नहीं होगा, सब अपना - अपना काम करेंगे, कोई दरिद्र नहीं होगा और परिश्रम करने वाले को बराबर काम मिलता रहेगा।
जुआ, मद्यपान, व्यभिचार या वर्ग विग्रह के लिए कोई गुंजाइश नहीं होगी।
धनी लोग अपने धन का विवेकपूर्ण उपयोग करेंगे, भोग - विलास और ऐशो - आराम को बढ़ाने में उसे बरबाद नहीं करेंगे।
स्वराज्य में यह नहीं होना चाहिए कि मुट्ठी भर धनी लोग रत्नजड़ित प्रासादों में रहें और हजारों - लाखों लोग हवा और प्रकाश से रहित कोठरियों में पशुवत जीवन बिताएं"
ग्रामीण विकास का लक्षण यही है कि भारत में एक ऐसा पूर्ण प्रजातन्त्र हो जो अपनी अहम् आवश्यकताओं के लिए आत्मनिर्भर, जन सहयोगी एवं विकास की निरन्तर लगन

अपने सम्मुख रखे। ग्रामीण विकास में निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किए जा सकते हैं →

(i) ग्रामीण निर्धनता को दूर कर जीवन-स्तर को उन्नत बनाना।
(ii) ऋण के दोषों को दूर कर ग्रामीण जनता की आर्थिक उन्नति को उन्नत करना।
(iii) कृषि के साधनों एवं विधियों में आमूल-चूल परिवर्तन करना।
(iv) कुटीर उद्योगों का पुनरोत्थान कर आत्मनिर्भरता की शक्ति प्रदान करना।
(v) श्रमदान की भावना जाग्रत कर स्वयं सेवा के भाव पैदा करना।
(vi) सामुदायिक जीवन व्यतीत करने का प्रशिक्षण देकर संगठन की भावना में वृद्धि करना।
(vii) शिक्षा एवं संस्कृति का प्रसार करना।
(viii) जन स्वास्थ्य एवं ग्राम्य स्वच्छता का ज्ञान करना।
(ix) लोकतंत्रीय भावना उत्पन्न कर स्थानीय शासन की स्थापना करना।
(x) मनोरंजन एवं सहकारी संस्थाओं की स्थापना करना।
(xi) भूमि व सम्पत्ति का समान वितरण कर वर्ग भेद का निवारण करना।
(xii) जाति-पाँति एवं छुआछूत को दूर करना।
(xiii) ग्रामीण जीवन को समृद्धशाली बनाना।
(xiv) निवास व्यवस्था एवं यातायात के साधनों की उन्नति करना।
(xv) जन सहयोग द्वारा गाँवों में आर्थिक उन्नति के कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करना।

Scanned with CamScanner